RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

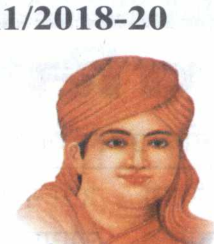

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 42 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 7 जनवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org
04 JAN 2018

वर्ष–74, अंक : 42, 4–7 जनवरी 2018 तदनुसार 24 पौष सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

## ऋतरक्षक नहीं दबता

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

**ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे।**
**विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान्विध्यति कर्ते अव्रतान्।।**

–ऋ० ९।७३।९

**शब्दार्थ–ऋतस्य** = **ऋत** = सृष्टिनियम का **गोपा:** = रक्षक **सुक्रतु:** = सदाचारी **न** = नहीं **दभाय** = दबता, **स:** = वह तो **हृदि +अन्तरा** = हृदय में **त्री** = तीन **पवित्रा** = पवित्रों को **दधे** = धारण किये है। **स:** = वह **विद्वान्** = ज्ञानी **विश्वा** = सब **भुवना** = भुवनों को, लोकों को **अभि+पश्यति** = सम्मुख देखता है। **कर्ते** = कर्त्तव्य कर्म में **अव्रतान्** = व्रतरहितों और **अजुष्टान्** = प्रीतिरहितों को, कर्म न करने वालों को **अव+विध्यति** = बींध देता है, नीचे गिरा देता है।

**व्याख्या**–आर्य धर्म में ऋत = सृष्टि–नियम का बड़ा महात्म्य है। ऋतज्ञानी, ऋतानुष्ठानी का पद बहुत ऊँचा है। ऋत का विचार हर एक को नहीं रुचता। कोई विरला ही होता है, जो इस परम आवश्यक तत्त्व पर दृष्टि देता है। वेद कहता है–**'ऋतस्य धीतिमृषिषाडवीवशत्'** (ऋ० ९।७६।४) = ऋत का चिन्तन ऋषिषाट् [ऋषियों के बलवाला] ही बार–बार चाहता है। वेदाध्ययन, सृष्टि–नियम–चिन्तन तथा योगाभ्यास ऋषि बनाते हैं। जो अभी ऋषि नहीं बना, किन्तु ऋषि बनने का मार्ग जिसने पकड़ लिया है, वेदाभ्यास और योगाभ्यास में जो निष्णात हो चुका है, वह लगातार ऋत का चिन्तन करता है और उसी के अनुसार अपनी दिनचर्या बनाता है। ऐसे मनुष्य को किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती। हानि के मार्ग पर तो वह जाता ही नहीं, अत: वेद का यह कथन सर्वथा सत्य है कि–**'ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतु:'**– ऋत का रक्षक, सदाचारी नहीं दबता, क्योंकि–**'त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे'**–वह तीनों पवित्रों को हृदय में धारण किये हुए है। भगवान्, ज्ञान तथा ध्यान तीन पवित्र हैं। ज्ञान, कर्म और उपासना तीन पवित्र हैं। पवित्र विचार, पवित्र उच्चार तथा पवित्र आचार तीन पवित्र हैं। इन तीनों पवित्रों को जिसने हृदय में धारण कर लिया, उसे कौन दबा सकता है! वह भवसागर से पार हो जाता है, जैसा कि वेद स्वयं कहता है–**'सत्यस्य नाव: सुकृतमपीपरन्'**–[ऋ० ७।७३।१]–सदाचारी को सत्य की नौकाएँ पार लगा देती हैं। सृष्टि–नियम–चिन्तन के कारण उसे सारे रचना–रहस्य का बोध हो जाता है और मानो वह समस्त लोक–लोकान्तरों को अपने सामने देखता है–**'विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यति'** = वह ज्ञानी सारे लोकों को अपने सम्मुख देखता है। सृष्टि–नियम का निरन्तर चिन्तन करने से स्रष्टा का ध्यान आता है, स्रष्टा का ज्ञान होने से सृष्टि का ज्ञान होना कोई अद्भुत बात नहीं हैं।

योगदर्शन के विभूतिपाद में कहा है–**'भुवनज्ञानं सूर्य्ये संयमात्'।।२६।।** सूर्य = चराचर के आत्मा में संयम करने से लोकों का ज्ञान होता है। ऐसा मनुष्य कर्त्तव्यभ्रष्टों को बींध देता है। उनके हृदय में गहरी चोट लगती है। उन्हें उनकी दुरवस्था का बोध कराके उससे ग्लानि करा देता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

## वर्ष 2018 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2018 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष कैलेण्डर का मूल्य पाँच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

**प्रेम भारद्वाज**
**सभा महामंत्री**

**त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्त्ता:।**
**शतं नो रास्व शरदो विचक्षे अश्यामायूंषि सुधितानि पूर्वा।।**

–ऋ० २.२७.१०

**भावार्थ**–हे जीवनदाता सर्वोत्तम परमात्मन्! संसार में जितने दिव्य शक्ति वाले अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, इन्द्रादि जड़ देव हैं, और चेतन विद्वान् मनुष्य भी जो देव कहलाने के योग्य हैं, इन सबके आप ही राजा, स्वामी हो, इसलिए आपसे ही माँगते हैं कि हमें आपके ज्ञान और भक्ति के लिए सौ बरस पर्यन्त जीता रक्खो, जिससे हम मुख्य पवित्र आयु को प्राप्त होकर अपना और जगत् का कुछ कल्याण कर सकें।

# ऋषि दयानन्द प्रतिपादित राजधर्म

ले.-डॉ. भवानीलाल भारतीय 3/5, शंकर कालोनी श्रीगंगानगर

अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द ने आदर्श मानव जीवन की एक आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत की है। मनुष्य अपने जन्म से आरम्भ कर शिक्षा-दीक्षा, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम में रहकर किस प्रकार पूर्णायु प्राप्त करे, आदर्श जीवन की सारी प्रविधि बताकर लेखक ने कुछ अन्य विषयों का विवेचन भी किया है इस प्रसंग में सर्वप्रथम 'राजधर्म' या राज्य प्रशासन को लेकर उन्होंने इस ग्रन्थ का छठा समुल्लास लिखा। ऋषि दयानन्द राजनीति की अपेक्षा राजधर्म शब्द के प्रयोग को प्रशस्त मानते हैं, अत: उन्होंने इस अध्याय को निम्न शीर्षक दिया।

**अथ राजधर्मान् व्याख्यास्याम:**

इस अध्याय को लिखने में दयानन्द ने प्रमुखत: मनुस्मृति को आधार बनाया है। राजनीति या राजधर्म की विवेचना यों तो संस्कृत के अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों में भी मिलती है, किन्तु मनु ने इस विषय का विशद और गम्भीर विवेचन किया है। दयानन्द ने देश के सर्वोच्च शासक को 'राजा' से उनका अभिप्राय पुश्तैनी वंश-परम्परा से राज्याधिकार प्राप्त करने वाले राजा से नहीं है, यद्यपि प्राचीन भारत में वंशगत तथा परम्परागत ऐसी शासन-प्रणाली शताब्दियों तक चलती रही। दयानन्द के विचारों से राजा को निर्वाचित होना चाहिए और उसे राज्य सञ्चालन में निर्वाचित सभा (संसद तथा मन्त्रिमण्डल) से निर्देश लेना चाहिए। इस प्रसंग में वे लिखते हैं-''एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति (सभापति राजा का दूसरा नाम है इसे राष्ट्राध्यक्ष भी कहा जा सकता है) तदधीन सभा, सभाधीन राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे'' इस पंक्ति के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वप्रथम प्रजा द्वारा एक सभा (संसद) का निर्वाचन किया जाना चाहिए। तब वह सभा (संसद) राजा (राष्ट्रपति या राष्ट्राध्यक्ष) का निर्वाचन करे। राजा पर सभा का पूर्ण नियन्त्रण रहे और सभा अपने द्वारा निर्वाचित सुयोग्य राजा का मार्गदर्शन प्राप्त कर राज्य का सञ्चालन करे। इस प्रकार राजा, सभा, प्रजा ये तीनों परस्पर एक दूसरे का नियन्त्रण करते रहें ताकि किसी स्तर पर अन्याय तथा स्वेच्छाचारिता न हो सके।

सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ समुल्लास के अविशिष्ट भाग में दयानन्द ने राजनीति, प्रशासन, परराष्ट्र नीति, युद्ध आदि विभिन्न विषयों पर मनुस्मृति को उद्धृत कर अपने विचार रखे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि शासनाध्यक्ष राजा, उसके सेनापति तथा सभासदों को जितेन्द्रिय तथा दस कामज एवम् आठ क्रोधज दुर्गुणों से रहित होना चाहिए। मन्त्रियों के गुणों ओर उनकी योग्यता को निर्धारित करने के पश्चात् वे अन्य देशों में भेजे जाने वाले दूतों, सन्धि-विग्रहिक (परराष्ट्र मन्त्री) राजपुरोहित, गुप्तचर, राज्य कर्मचारी, राजस्व विभाग के कार्यकर्त्ता आदि के कर्त्तव्यों का विवेचन करते हैं। राजस्व अधिकारी प्रजा से करों को इस प्रकार वसूल करें जिससे कि लोगों पर अधिक आर्थिक भार न पड़े। राज्य की आन्तरिक स्थिति तथा पड़ौसी देशों में कौन शत्रु या मित्र हैं, यह सब जानने के लिए चतुर गुप्तचरों की आवश्यकता रहती है। गुप्तचरों की सहायता से राजा सर्वत्र सारी जानकारियाँ प्राप्त करता रहे। साम, दाम, भेद जैसे उपायों का प्रयोग कर मित्रजन, शत्रुओं तथा तटस्थों के प्रति उसे अपनी नीति बनानी चाहिए। विभिन्न राज्यों में परस्पर युद्ध की परिस्थितियाँ सामान्य स्थिति से भिन्न होती हैं। युद्ध के समय के राजा के कर्त्तव्य सामान्य कर्त्तव्यों से भिन्न होते हैं। युद्ध में जय या पराजय प्राप्त होने पर शासक का कैसा व्यवहार हो, यह विस्तार से यहाँ निरूपित किया गया है। युद्ध कौशल पर संस्कृत में 'समरांगणसूत्रधार' जैसे ग्रन्थ मिलते हैं। दयानन्द ने युद्ध काल में नाना व्यूहों की रचना का उल्लेख किया है। मनु ने शकट, वराह, मकर, सूची, वज्र, सर्प तथा पद्म के भेद से सात प्रकार की व्यूह रचना मानी है। सेना प्रस्थान के लिए भूमि, जल तथा आकाश, इन तीनों मार्गों की व्यवस्था बताई गई है।

राजा दण्डाधिकारी तथा न्यायाधीश, दोनों के कार्यों का वहन करता है। इसलिए अपराधियों के प्रति किस प्रकार की दण्ड व्यवस्था रहे, यह मनुस्मृति में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इसी प्रकार प्रजा के बीच उत्पन्न विभिन्न वाद-विवादों का न्यायपूर्वक विचार तथा निस्तारण राजा का प्रमुख कर्त्तव्य है। न्याय के निर्वहन में साक्षियों की पधान भूमिका रहती है, क्योंकि साक्षी लोग कृत अपराध की जानकारी रखते हैं तथा वे न्याधीश को सही तथ्यों तक पहुँचने में सहायता देते हैं। भारत की आचार-मीमांसा सत्य को सर्वोपरि महत्त्व देती है। मनु ने साक्षी के प्रसंग में लिखा है-

**सत्येन पूज्यते साक्षी धर्म: सत्येन वर्धते।**

**तस्मात् सत्यं हि वक्तव्यं सर्ववर्णेषु साक्षिभि:।।८।८३**

अर्थात् सत्य बोलने से साक्षी पवित्र होता है, सत्य से धर्म की वृद्धि होती है, इस कारण सब कार्यों में साक्षियों को सत्य ही बोलना चाहिए। दण्ड देते समय राजा (न्यायाधीश) को अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए। जो राजा दण्डनीय को दण्ड न दे अर्थात् अपराधी को छोड़ दे तथा अदण्डनीय को दण्डित करे तै वह निन्दा का पात्र होता है तथा मरणोपरान्त नरक प्राप्त करता है। मनु की राज में दण्ड चार प्रकार का होता है-वाणी से ताड़ना, धिक् दण्ड-अपराधी को धिकृत करना, अर्थदण्ड-जुर्माना करना तथा अन्तिम वध दण्ड, जो किसी हत्यारे को दिया जाता है। व्यभिचारी पुरुष तथा स्त्री के लिए अतीव कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई है।

ऋषि दयानन्द ने राजधर्म तथा राज्य प्रशासन की जो रूपरेखा यहाँ प्रस्तुत की है वह अन्तिम या अलंघनीय है, ऐसी बात नहीं है। देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार इसमें यथेष्छ परिवर्तन किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द ने उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह तथा शाहपुराधीश राजधिराज नाहरसिंह को मनुस्मृति के इन्हीं राजधर्म परक अध्यायों को विस्तार से समझाया था तथा उन्हें निर्देश दिया था कि प्रजा के हित को वे सर्वोपरि समझें तथा निष्पक्ष भाव से प्रजापालन को अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य मानें। राजाओं को उनका प्रजापालन रूपी धर्म सिखलाने के लिए स्वामी जी ने समय-समय पर अपने इन शिष्य नरेशों को विस्तृत पत्र लिखकर कर्त्तव्य बोध भी कराया। महाराणा सज्जन सिंह ने एक ऐसी ही प्रबोधन देने वाले पत्र को पाकर उत्तर में स्वामी जी को लिखा।

'समयानुसार शिक्षा जो आपने लिखी सो हमारे लिए उपकारिणी हुई। प्रतम से ही इस प्रकार का ध्यान था, अब भी वैसा ही रहेगा, किन्तु अधिक।'' शाहपुरा नरेश ने एक पत्र में स्वामी जी को सूचित किया कि वे अपने राज्य में क्षत्रिय पाठशाला स्थापित करना चाहते हैं। जोधपुर के शासक महाराज जसवन्त सिंह तथा उनके अनुज महाराज प्रतापि सिंह को भी स्वामी जी ने राजधर्म की प्रेरणा देने वाले उद्बोधक पत्र लिखे थे।

छठे समुल्लास की समाप्ति पर स्वामी जी लिखते हैं कि संस्कृत में राजधर्म के विधायक मनुस्मृति (अ०, ७, ८, ९) से भिन्न अन्य ग्रन्थ भी हैं। वे यहाँ शुक्रनीति, महाभारतान्तर्गत विदुर-प्रजागण तथा शान्तिपर्व का उल्लेख करते हैं। राजधर्म-प्रकरण को विराम देते हुए ऋषि दयानन्द एक महत्त्वपूर्ण संकेत यह देते हैं कि किसी देश या राज्य का लौकिक शासक तो मरणधर्मा राजा होता है किन्तु समस्त सृष्टि का शासक प्रजापति परमेश्वर है, अत: प्रत्येक मनुष्य को समझना चाहिए-''**वयं प्रजापते: प्रजा अभूम**। हम प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा, हम उसके किंकर भृत्यवत् हैं।'' संकेत रूप में दयानन्द कहना चाहते हैं कि सांसारिक राजा की अपनी सीमाएँ होती हैं। वह न्याय करता है तो कभी-कभी अन्यायाचरण भी कर बैठता है। वस्तुत: निखिल ब्रह्माण्ड का सर्वोपरि शासक परमात्मा ही है, जिसकी न्याय-व्यवस्था में कोई व्यतिक्रम नहीं होता। अत: उस परमात्मा से हमारी विनय होनी चाहिए कि उसके कृपाकटाक्ष से हम सही अर्थ में राज्याधिकारी बनें तथा वह हमें सत्य और न्याय के आचरण में प्रवृत्त करे। इस प्रकार उन्होंने आस्तिकता को राजा (शासक) का प्रमुख गुण ठहराया है।

ऋषि दयानन्द के लिए राजधर्म का प्रतिदिन कितना आवश्यक तथा सामयिक था, यह इस तथ्य से विदित होता है कि उन्होंने अपने सिद्धान्त

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

# लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति का पर्व

भारतीय संस्कृति के प्रतीक एवं प्रेरणाप्रद पर्व भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाया जाने वाला प्रत्येक पर्व हमें नव प्रेरणा प्रदान करने वाला होता है। पर्व प्रकृति के साथ जुड़कर हमारे जीवन में आनन्द और उल्लास भर देते हैं। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन की सूचना हमें पर्वों के द्वारा ज्ञात होती है। इसलिए हमारे ऋषियों मुनियों ने ऋतुओं के आधार पर हमारे पर्वों को निर्धारित किया है। पर्वों के बिना जीवन नीरस और फीका बन जाता है। पर्वों से व्यक्ति का जीवन उत्साहमय बन जाता है। भारतीय संस्कृति में समय-समय पर पर्वों का आयोजन किया जाता है। ये पर्व हमें ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाए जाने वाले पर्वों द्वारा कोई न कोई दिव्य संदेश मिलता है। पर्व हमें पूर्ण करते हैं, आनन्दित करते है और उत्साह एवं उमंग के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति के त्यौहार भी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। सम्पूर्ण उत्तर भारत में इन त्यौहारों को अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति से एक दिन पहले लोहड़ी का त्यौहार पंजाब प्रान्त में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व परे लोगों में बहुत आनन्द और उत्साह होता है। मकर संक्रान्ति का पर्व ऐतिहासिक पर्व है। सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में गमन का प्रतीक है। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहा है। छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम अयन है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहा जाता है। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन घटता जाता है और रात्रि बढ़ती जाती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक दिखाई देता है। चराचर जगत शीतराज का लोहा मान रहा है। हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं- रात्री जानू दिवा भानुः रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य किसी कवि की यह उक्ति इस अवसर पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था होती है कि सूर्य देव उदय होते ही अस्ताचल की ओर जाने की तैयारियां शुरू कर देते हैं। मानो दिन रात्रि में ही लीन होता जाता है। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती है। अन्त को उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थपर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको देवयान देवयान कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाशमार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्सर्ग की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था।

मकर संक्रान्ति का यह पर्व बहुत चिरकाल से मनाया जाता है। यह भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सभी प्रान्तों में इसके मनाए जाने की परिपाटी भी समान पाई जाती है। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल(रूई) बतलाए गए हैं। जिस में तिल सबसे प्रमुख हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सभी प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा भी दिखाई देती है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज बढ़ाने वाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म का एक सकन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है-

**देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।-**

**गीता१७।२०**

अर्थात् देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान सात्त्विक दान कहलाता है। तथा-

**दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।**

अर्थात् हे अर्जुन। दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। गीता के इन वचनों के अनुसार इस प्रबल शीतकाल में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोहड़ी मनाने का त्योहार प्रचलित है। लोहड़ी का पर्व नवशिशु और नव दम्पत्ति के स्वागत के लिए मनाया जाता है। उस वर्ष के नव शिशु और नव दम्पत्ति का बड़े हर्ष और स्वागत के साथ इष्टमित्रों तथा बन्धु-बान्धवों के द्वारा किया जाता है। पर्व हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक होते हैं। आर्यों के पर्वों पर यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्पादन किया जाता है, जो आर्य जनता के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है। यही आर्यों के पर्वों की पर्वता है। पर्व के दिन दिन-प्रतिदिन के व्यवसायों की दौड़ धूप से अवकाश पाकर आर्य गृहों में विशेषता से आनन्दपूर्वक यज्ञ, अध्ययन और दान का अनुष्ठान किया जाता है। समस्त संसार के विद्वान् इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी जाति के पर्व उस जाति के जीवन हैं, अथवा दूसरे शब्दों में किसी जाति का अस्तित्व, उन्नति और अवनति उस के पर्वों के प्रकार से ही प्रकट होती है। जो जाति अपने पर्वों को उनके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान रखकर समुचित श्रद्धापूर्ण प्रेम और असीम उत्साह से मनाती है। उसी जाति को वस्तुतः उन्नत और उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

मकर संक्रान्ति का पर्व सम्पूर्ण मानव जाति में आनन्द एवं उत्साह लेकर आता है। पर्व हमारी संस्कृति के प्राण हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने अपनी संस्कृति सभ्यता को जीवित रखने के लिए इन पर्वों को निर्धारित किया है। आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के महत्व से अनभिज्ञ है। नई पीढ़ी में इन नैतिक मूल्यों के समावेश के लिए, अपनी संस्कृति और सभ्यता से जोड़ने के लिए इन पर्वों के महत्व से अवगत कराएं। पर्व या त्यौहार का उद्देश्य के खाना-पीना तक ही सीमित नहीं है। इन पर्वों के द्वारा हमें नई प्रेरणा मिली है, नव ऊर्जा का संचार होता है। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को अपने पर्वों के शुद्ध स्वरूप से परिचित कराना हम सबका दायित्व है।

**प्रेम भारद्वाज**
**संपादक एवं सभा महामन्त्री**

## आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

**-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा**

# पुरुषार्थ और प्रारब्ध

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

हमारा जीवन प्रारब्ध की नींव पर बना है और जीवन को सार्थक करने के लिए हमें पुरुषार्थ करना है। हम वेद मार्ग पर चलते हुए ज्ञान प्राप्ति, उपासना व समाजोत्थान के लिए जितने कार्य करेंगे उससे हमारा वर्तमान और भावी जीवन यशस्वी व सुखमय होगा। प्रश्न है कि पुरुषार्थ और प्रारब्ध हैं क्या? इस संबंध में ऋषि दयानन्द जी 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में कहते हैं कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिये है कि जिस से संचित प्रारब्ध बनते हैं, जिसके सुधरने से सब सुधरते हैं और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं। इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

ऋषि दयानन्द ने पहली बात यह कही है कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है। पुरुषार्थ से संचित प्रारब्ध बनते हैं अर्थात् प्रारब्ध वृद्धि को प्राप्त होते हैं। पुरुषार्थ के सुधरने से सब सुधरते हैं अर्थात् इससे हमारा प्रारब्ध भी सुधरता है। ऋषि ने यह भी कहा है कि पुरुषार्थ के बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं अर्थात् प्रारब्ध भी बिगड़ता है। इन्हीं कारणों से पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है। पुरुषार्थ है क्या? पुरुषार्थ सद्कर्मों को कहते हैं। वेदानुकूल सद्कर्मों को पुरुषार्थ कहते हैं। वेदविरुद्ध कार्य भी पुरुषार्थ हो सकता है परन्तु इन अशुभ कर्मों का परिणाम सुखमय न होकर दुःखरूप ही होगा। मत-मतान्तरों की मिथ्या मान्यताओं के आचरण में पुरुषार्थ तो होता है परन्तु इससे हमारा प्रारब्ध सुख रूप न होकर दुःख रूप ही होता है। इसीलिए सभी मनुष्यों को वैदिक धर्म की शरण में आकर श्रेष्ठाचार कर सुख रूप प्रारब्ध में वृद्धि करनी चाहिये। अधिक सद्कर्मों के करने के लिए अधिक पुरुषार्थ अर्थात् श्रम करना होगा जिससे हमारे संचित पुरुषार्थ में भी वृद्धि होगी। इसके लिए यह जानना भी आवश्यक है कि मनुष्य जो कर्म करता है वह क्रियमाण व संचित कर्म होते हैं। क्रियमाण कर्म वह होते हैं जिसका फल करने के साथ व कुछ समय में ही मिल जाता है। दूसरे कर्म संचित कर्म होते हैं जो हमारे प्रारब्ध में जुड़ कर उसमें वृद्धि करते हैं। संचित कर्म व संचित प्रारब्ध से भावी समय अर्थात् परजन्म में हमें उसके अनुरूप जाति, आयु और भोग प्राप्त होते हैं। सद्कर्मों व पुरुषार्थ से बना प्रारब्ध ही हमें मोक्ष तक ले जाता है। यदि हम अपने प्रारब्ध में सद्कर्म रूपी पुरुषार्थ की वृद्धि नहीं करते तो यह हमें दुःख व निम्न योनियों की यात्रा करा सकता है। यह भी जान लें कि प्रारब्ध को ही लोग भाग्य के नाम से भी कहते हैं। प्रारब्ध व पुरुषार्थ को हम उदाहरण से भी समझ सकते हैं। प्रारब्ध हमारे संचित कर्मों की पूंजी है जिसके अनुरूप सुख व दुःख का भोग हमने कुछ कर लिया और शेष जीवन में भी करेंगे। प्रारब्ध के अनुसार ही हमें यह मानव जन्म मिला है। प्रारब्ध से ही हमारी जाति, आयु व भोग को परमात्मा हमारे जन्म से पूर्व निर्धारित करते हैं।

हमारे इस जन्म से पूर्व परमात्मा ने हमारे प्रारब्ध के अनुसार इस मनुष्य जन्म, इसकी आयु व इसमें मिलने वाले सुख व दुःखों का निर्धारण किया है। इसी के अनुसार हमारा जीवन चल रहा है। प्रारब्ध को यदि कर्मों की पूंजी मान लें तो हम जो शुभ व अशुभ कर्म इस मानव जीवन में करते हैं वह उस प्रारब्ध के शुभ व शुभ कर्मों में संग्रहित होते जाते हैं। प्रारब्ध में यदि सद्कर्मों की अधिकता होती है तो हमें मृत्योपरान्त मनुष्य जन्म मिलता है और यदि हमारे अशुभ कर्म अधिक होते हैं तो हमें पशु व इससे भी निकृष्ट योनियों में जाना पड़ता है जहां सुख कम व दुःख अधिक होते हैं। अनादि काल से यह क्रम चला आ रहा है। इसी सिद्धान्त के अनुसार ही हम अब तक अनन्त बार जन्म ले चुके हैं। संसार में हम जितनी भी योनियां देखते हैं, प्राय: उन सभी योनियों में हमारा अनेकानेक बार जन्म हो चुका है। अनेक बार हम मोक्ष में भी रह चुके हैं। परमात्मा हमारे सभी जन्मों व मोक्ष का साथी रहा है और आगे भी रहेगा। हम जितने अधिक शुभ कर्म करते हैं उतना अधिक परमात्मा के निकट होते हैं और बुरे कर्म करने से परमात्मा से हमारी दूरी हो जाती है। यह दूरी देश व काल की नहीं होती। यह ऐसा होता है कि जैसे हमारे किसी बुरे आचरण से हमारे माता, पिता या मित्र नाराज हों तो सामने होकर भी वह हमसे बातें नहीं करते और उपेक्षा का व्यवहार करते हैं। कुछ इसी प्रकार की दूरी परमात्मा से बुरे कर्म करने पर होती है जिससे हमें लाभ नहीं अपितु दुःख की प्राप्ति रूप हानि होती है। अत: हमें सोच विचार कर अपने जीवन में केवल अच्छे कर्मों का ही आचरण करना चाहिये जिससे हमारा प्रारब्ध शुभ कर्मों से भरा हुआ हो और हम वर्तमान व भावी जन्मों में अधिक से अधिक सुखों को प्राप्त हो सकें और ईश्वर की कृपा से मोक्ष की स्थिति में पहुंच कर मोक्ष को भी प्राप्त कर सकें।

प्रारब्ध शुभ और अशुभ कर्मों से बनता है। हम पहले लिख चुके हैं कि मृत्यु के समय यदि मनुष्य के शुभ कर्म आधे से अधिक होते हैं तो मनुष्य जन्म मिलता है। जीवात्मा के शुभ कर्म जितने अधिक होंगे उसी के अनुसार उसका मनुष्य जन्म श्रेष्ठ माता-पिता व परिवेश में होगा ऐसा अनुमान होता है। हम यदि इस जन्म में एक अशिक्षित एवं निर्धन माता-पिता के यहां जन्में हैं तो इसका कारण भी हमारा प्रारब्ध ही है। यदि प्रारब्ध इससे अधिक अच्छा होता तो सम्भव था कि हमें ऐसे माता-पिता मिलते जो वेद ज्ञान से युक्त व साधन सम्पन्न हो सकते हैं। माता-पिता यद्यपि निर्धन व अशिक्षित थे परन्तु थे दोनों ही धर्मात्मा। उनसे हमें वैसे ही संस्कार मिले। उन्होंने अभावों में रहते हुए भी हमारी शिक्षा व अच्छे संस्कारों का अपनी क्षमता से कहीं अधिक उत्तम प्रारब्ध किया जिसका लाभ हमें यह मिला कि हम कुछ शिक्षित हो गये और आर्य समाज की शरण में जा पहुंचे जहां हमें आर्य समाज के विद्वान मित्रों की संगति मिली, हमारा मन प्रवचन व उपदेश सुनने में लगता था।

हम आर्यसमाज के बड़े उत्सवों में जाते थे, स्वाध्याय में भी हमारी रूचि थी, हम अन्य वस्तुओं पर धन का व्यय न कर पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाओं के क्रयण में वा उसके सदस्य बन कर उनका अध्ययन वा स्वाध्याय करते थे यद्यपि हमें ज्ञात नहीं कि हमारा पूर्व जन्म व प्रारब्ध एवं संस्कार कैसे थे परन्तु इस जन्म में हम ऋषि दयानन्द, आर्य विद्वानों व आर्यसमाज से जुड़ कर पूर्ण सन्तुष्ट हैं। अन्यों के बारे में भी हमारी ऐसी ही राय है। यह हमने प्रारब्ध व पुरुषार्थ के विषय में कुछ बताने का प्रयत्न किया है। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों एवं इतर वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मनुष्यों को वैदिक साहित्य के अध्ययन में रूचि लेनी चाहिये। उसके अनुरूप आचरण करना चाहिये, ईश्वरोपासना एवं यज्ञ आदि यथाशक्ति करने चाहिये और अपने मन को स्वाध्याय व ईश्वर चिन्तन में लगाना चाहिये जिससे अनावश्यक विचार मन में न आयें। इसके अतिरिक्त परोपकार व दान आदि भी यथाशक्ति करते रहना चाहिये। अच्छे मित्र बनाने चाहिये जो वेद के विद्वान हां, सच्चरित्र हों, सामिष भोजन न करते हों, जिनमें चारित्रिक दोष न हों। ऐसा करने पर हमारा जीवन व कर्म अच्छे हो सकते हैं। यह पुरुषार्थ हमारे प्रारब्ध में गुणात्मक वृद्धि कर हमारे लिए शुभ होगा। यदि मनुष्य को अपने जीवन का उत्थान व कल्याण करना हो तो उसे वेदों के सर्वोपरि विद्वान महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र पढ़ना चाहिये और उनकी चारित्रिक विशेषताओं को अपने जीवन में धारण करना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार आदि आर्य पुरुषों के जीवन चरित्र व साहित्य को पढ़ना चाहिये। इससे पुरुषार्थ की प्रेरणा तो मिलेगी ही, इससे प्राब्ध भी सुधरेगा व वृद्धि को प्राप्त होगा और हमारा यह जीवन व परलोक निश्चय ही सुधरेगा। इसी के साथ चर्चा को विस्तार न देकर विराम देते हैं।

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मन्दिर, जी. टी. रोड़, फिरोजपुर छावनी में 'स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस' बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। सर्वप्रथम पंडित मनमोहन शास्त्री जी ने विशेष यज्ञ करवाया, जिसमें अमरीका से आया बेटा प्रिय रोहन अपनी माता श्रीमति अन्जू व पिताश्री विजय कुमार (ऊना निवासी) के साथ मुख्य यजमान बना।

यज्ञ के उपरान्त प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर बड़े ही सुन्दर विचार रखे और कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो-जो प्रेरणाएं अपने गुरु स्वामी दयानन्द जी से ली जो इन्हें स्वयं भी अपनाया और आजीवन उसके प्रचार प्रसार में अपना जीवन आहूत कर दिया और देश-जाति के लिये अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया, हमें भी वैदिक सिद्धान्त अपना कर देश-जाति और धर्म के काम आना चाहिए।

अन्त में जलपान का आयोजन रखा गया और शान्ति पाठ उपरान्त कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

**मनोज आर्य**
महामन्त्री, आर्य समाज
फिरोजपुर छावनी

# सत्यार्थ प्रकाश में आदर्श राजनीति व राजधर्म

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्वामी दयानन्द सरस्वती की संसार को एक महत्वपूर्ण देन है। इन ग्रन्थ में मानव जीवन से संबंधित लगभग प्रत्येक विषय पर विचार किया गया है। इस ग्रन्थ के आधार पर जीवन जीने वाले व्यक्ति को कोई धोखा नहीं दे सकता है, ठग नहीं सकता है। उसका जीवन सत्य पर आधारित हो जाता है। वह समाज को अविद्या अंधकार से हटाकर विद्या के प्रकाश में लाने का प्रयास करता है। वह अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता है वरन् सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझता है। संसार में समाज को विकास के रास्ते पर ले जाने में राज्य व्यवस्था का बड़ा हाथ होता है अतः सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में राज धर्म का विशद वर्णन किया गया है। हम इस लेख में राजधर्म और राजनीति पर सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर विचार करेंगे।

मनुस्मृति 7.2 में क्षत्रिय को राज्य की रक्षा का दायित्व सौंपा है।

**ब्राह्म प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथा विधि।**

**सर्वस्यास्य यथा न्यायं कर्त्तव्यं परिरक्षणम्।। मनु. 7.2.**

जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा विद्वान् सुशिक्षित होकर क्षत्रिय को योग्य है कि राज्य की यथावत् रक्षा करे।

सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार राज्य की व्यवस्था एक व्यक्ति के हाथ में न होकर तीन प्रकार की सभाओं के द्वारा की जानी चाहिए। अपने कथन की सिद्धि के लिए वेद मंत्र प्रस्तुत है-

**त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।। ऋ. 3.38.6.**

ईश्वर उपदेश देता है कि राजा और प्रजा के लोग मिलकर सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा और प्रजा के सम्बन्ध धर्मार्य्यसभा और राजार्य्यसभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या स्वातत्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे।

राजा वर्ग को प्रजा से अलग तानाशाह बन कर नहीं रहना है। सत्यार्थ प्रकाश में कहा गया है, जो प्रजा से स्वतंत्र स्वाधीन राज वर्ग रहे तो वह राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें। इसलिए अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाये जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा जाते हैं वैसे स्वतंत्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक नहीं होने देता, श्रीमान् को लूट कर अन्याय से दण्ड लेकर अपना प्रयोजन पूरा करेगा।

राजा का चुनाव प्रजा के सब लोगों को मिलकर करना है। वह राजा कैसा हो इस पर कहा गया है- 'जो मनुष्यों के इस समुदाय में परम ऐश्वर्य का कर्त्ता, शत्रुओं को जीत सके, जो शत्रुओं से पराजित न होवे, राजाओं में सर्वोपरि विराजमान, प्रकाशमान हो, कर्म, सभापति होने के अत्यन्त योग्य प्रशंसनीय गुण, कर्म, स्वभाव युक्त, सत्करणीय समीप जाने और शरण लेने योग्य, सब का माननीय होवे उसी को सभापति राजा करे।

राज धर्म में अत्यन्त महत्वपूर्ण है राज्य का शक्ति सम्पन्न होना तथा राज्य की रक्षा के लिए सेना और युद्ध के साधन की विपुलता होना। इस विषय में कहा गया है-हे राज पुरूषों। तुम्हारे आग्नेयादि अस्त्र और तोप, बन्दूक, धनुष बाण, करवाल (तलवार) आदि शस्त्र शत्रुओं के पराजय करने और तुम्हारी सेना प्रशंसनीय होवे जिससे तुम सदा विजयी होवो परन्तु जो निन्दित अन्यायरूप काम करता है उसके लिए पूर्व चीजें न होवें। राज्य तभी तक बढ़ता है जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं।

राज धर्म के लिए कैसे लोगों को चुना जावे। इस पर कहा गया है:

वह सभेश राजा इन्द्र (विद्युत्त) के ग्पान शीघ्र ऐश्वर्यकर्त्ता, वायु के समान सबका प्राण प्रिय मित्र और हृदय की बात जानने वाला, यम पक्ष पात रहित न्यायाधीश के समान वर्त्तने वाला, सूर्य के समान न्याय, धर्म और विद्या का प्रकाशक, अन्धकार, अविद्या, अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टों के भस्म करने वाला, वरूण अर्थात् बांधने वाले के समान दुष्टों को अनेक प्रकार से बांधने वाला, चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ पुरूषों को आनन्द दाता धनाध्यक्ष के समान कोषों को पूर्ण करने वाला सभापति होवे।।

विषय को विस्तार देते हुए आगे कहा गया है, राजा और राज्य सभा के सभासद तब हो सकते हैं जब वे लोग चारों वेदों को कर्मोपासना ज्ञान विद्याओं के जानने वाले से तीनों विद्या सनातन दण्ड नीति, न्याय विद्या, आत्म विद्या अर्थात् परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव स्वरूप को यथावत् जानने रूप ब्रह्म विद्या और लोक से वार्ताओं का आरम्भ सीख कर सभासद वा सभापति हो सके।

रिश्वत खोर कर्मचारियों पर दृष्टि रखे-क्योंकि प्रायः राजा के द्वारा प्रजा की सुरक्षा के लिए नियुक्त राज सेवक दूसरों के धन के लालची अर्थात् ऐसा प्रयत्न करे कि वे प्रजाओं के साथ ऐसा बर्ताव न कर पायें।

राज्य में अपराधों की रोक के लिए कठोर दण्ड नीति आवश्यक है। जो दण्ड है वही पुरूष राजा, वही न्याय का प्रचार कर्त्ता और सबका शासन कर्त्ता, वही चार वर्ण और आश्रमों के धर्म का जिम्मेदार है।

वास्तव में दण्ड ही सब प्रजाओं पर शासन कर्त्ता है। दण्ड ही प्रजाओं की सब ओर से रक्षा करता है। सोती हुई प्रजाओं में दण्ड ही जागता रहता है। इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड विधान को राजा का प्रमुख धर्म मानते हैं।

जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से धारण किये जाये तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाये तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है। (क्रमश)

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज नंगल के तत्वाधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रातः 10:00 बजे हवन यज्ञ में पंकज खन्ना जी उप-मन्त्री सहपत्नीक मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुए। पंडित श्री कृष्ण कांत जी ने बड़ी श्रद्धभाव से मन्त्रोचारण कर हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्रीमति सहगल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी, भजन के रूप में गाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इसके पश्चात नगर के विभिन्न स्कूलों से आए विद्यार्थीयों ने श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर रखी प्रतियोगता में भाग लिया और वैदिक भजन भी प्रस्तुत किए।

मोहाली-चण्डीगढ़ से पधारे पंडित सुन्दर लाल जी शास्त्री जी ने सर्वस्व त्यागी स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनगाथा का व्याख्यान बड़े ही सरल शब्दों में किया। उन्होंने कहा कि वे एक पूर्ण नेता थे। सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रतीक थे। वीरता, बलिदान उनके रोम-रोम में व्याप्त थी। निर्भयता की भावना, वाणी में ओज, दीन-दुखीयों के प्रति दया भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानंद जी भारत में एक राष्ट्रीयता, एक संगठन, एक जाति, एक धर्म, एक भाषा के प्रचार के लिए शुद्धि आंदोलन एवं शुद्धि का कार्य किया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी को भारत के प्रसिद्ध महापुरुषों में गिना जाता है। इन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। स्वराज हासिल करने के लिए, देश को अंग्रेजों की दासता से छुटकारा दिलाने हेतु, दलितों को उनके अधिकार दिलाने हेतु और पश्चिमी शिक्षा की जगह वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रबंध करने जैसे अनेक कार्य किए। सन् 1901 में वैदिक शिक्षा के लिए गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल अब ''गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार'' के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द, शिक्षाविद, स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्य समाज के सन्यासी थे। जिन्होंने दयानन्द की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने कहा कि स्वामी को अगर सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो हमें उनके द्वारा राष्ट्र के लिए किए गए कार्यों को अपनाना होगा और उन्होंने जो मार्ग दिखलाया, उस मार्ग पर चलना पड़ेगा, तभी हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

अन्त में श्री. ए. डी. सरदाना जी ने एवं श्री. ओ. पी. खन्ना (संरक्षक) एवं समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र जी ने श्री सुन्दर लाल शास्त्री जी का धन्यवाद किया।

महामन्त्री श्री सतीश अरोड़ा जी ने, वहाँ उपस्थित शहर के गणमान्य सज्जनों का एवं उप-प्रधान प्रेम सागर, कोषाध्यक्षक सतपाल जौली, योगाचार्य प्रेम प्रकाश, रछपाल राणा, हरेन्द्र भारद्वाज, तालूजा जी, राजीव खन्ना जी, करन खन्ना जी, ए. डी. सरदाना जी, ओ. पी. खन्ना जी, सुरेन्द्र शास्त्री जी, श्रीमति सहगल, आशा अरोड़ा जी, एन. के. शर्मा जी का धन्यावाद किया।

शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर का वितरण किया गया।

**सतीश अरोड़ा, मन्त्री, आर्य समाज**

पृष्ठ 2 का शेष-ऋषि दयानन्द...

प्रतिपादक प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से भिन्न अन्य ग्रंथों से भी प्रसंग के आग्रह से इस विषय की चर्चा की है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, यद्यपि वेद-विषयक जानकारी देने वाला ग्रन्थ है, तथापि उसमें अथ राज प्रजा धर्म विषय: संक्षेपत:' शीर्षक से वेद-मन्त्रों के प्रमाण देकर अभीष्ट विषय की साङ्गोपाङ्ग विवेचना की गई है। इस प्रकरण के आरम्भ में 'त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि।' (ऋ० ३।८६।६) तथा यजुर्वेद के 'क्षत्रियस्य योनिरसि' (२।१) और 'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च।' (२०।२५) मन्त्र देकर राजा द्वारा गठित राजार्यसभा, विद्यार्यसभा तथा धर्मार्यसभा के कर्त्तव्यों को निर्धारित किया है। यजुर्वेद के अन्य राजधर्म विषयक मन्त्र भी यहां विवेचित हुए हैं। 'इमं देवा असपत्नं सुवध्यं महते क्षत्राय।' (यजु० ९।४) को उद्धृत कर उस वेदवित्, सौम्यगुण सम्पन्न सकल विद्यायुक्त व्यक्ति को सभाध्यक्ष या राजा निर्वाचित करने के लिए कहा गया है जो अपनी प्रजा को सुख प्रदान कर सके, साथ ही शत्रुओं का उन्मूलन कर निष्कण्टक राजधर्म का प्रवर्तन करने में सक्षम हो।

'भूमिका' के राजधर्म के प्रकरण में अथर्ववेद के 'इन्द्रो ज्याति' तथा अन्य मन्त्रों के अतिरिक्त राजसभा एवं समिति विषयक अन्य मन्त्र **( तं सभा च समितिश्च तथा सभ्य सभां मे पाहि )** व्याख्या हित उद्धृत किये हैं। राजाधर्म निरूपक इस प्रकरण को परिपूर्णता देने के लिए दयानन्द ने मन्त्र संहिता से भिन्न ब्राह्मण ग्रन्थों में आये इस विषय के प्रकरणों को भी यहाँ सन्निविष्ट कर दिया है। वे लिखते हैं कि-**''इयं राजधर्मव्याख्या वेदरीत्या संक्षेपेण लिखिताऽतोऽग्र ऐतरेयशतपथ-ब्राह्मणादिग्रन्थरीत्या'' संक्षपतो लिखयते।''** राजधर्म की यह व्याख्या तथ्य की रीति से लिखी, अब आगे इस विषय को एतदेय तथा शतपथ ब्राह्मणां में आए वर्णनों के अनुसार लिखेंगे। प्रसंग के अनुरोध से ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित साम्राज्य, भोज्य, स्वराज्य वैराज्य पारमेष्ठय राज्य आदि विविध शासन प्रणालियों को व्याख्यात किया है, साथ ही शतपथब्राह्मण में आये 'राष्ट्रं वा अश्वमेध:' (१३।१।६।१) आदि उद्धरणों की व्याख्या करते हुए **न्याययुक्त राज्य पालन को सच्चा अश्वमेध यज्ञ बताया है।** इस प्रकार वेद संहिता एवं ब्राह्मण ग्रन्थ वर्णित राजधर्म की विवेचना के उपसंहार में दयानन्द इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वास्तव में प्रजातान्त्रिक मूल्यों पर आधारित राजव्यवस्था भारत में, 'श्री मन्महाराज युधिष्ठिर पर्यन्त' बराबर चलती रही। दैव दुर्विपाक से महाभारत काल में जब यह व्यवस्था नष्ट हो गई तो आर्यों की स्वाधीनता भी स्तिर नहीं रही।

ऋषि दयानन्द की दृष्टि में राजधर्म की विवेचना कितनी महत्वपूर्ण थी, इसका पता इस तथ्य से भी लगता है कि स्वामी जी ने व्यवहारभानु तथा संस्कृत-वाक्यप्रबोध जैसे बालकों को सामान्य शिष्टाचार सिखाने वाले लघु ग्रन्थों में भी प्रसंग आने पर इस अत्यावश्यक विषय की चर्चा की है। प्रथम हम व्यवहारभानु की चर्चा करें। इसमें रोचक दृष्टान्तों एवं कथा कहानियों की सहायता से राजसभा में खुशामदी दरबारियों से होने वाली हानियों की बात आई है। यहीं पर राजमहल में धार्मिक अनुष्ठान करने वाले एक लोभी पुरोहित तथा दानाध्यक्ष के दृष्टान्त से राजकोष की लूट को दर्शाया गया है। साथ ही अन्धेर नगरी वाला लोक आक्यान देकर स्पष्ट किया है कि किस प्रकार मूर्ख राजा और चाटुकार सभासद अन्धेरनगरी के राजा को विनाश के गर्त में धकेल देते हैं। स्मरणीय है कि ऋषि दयानन्द के समकालीन भारतेन्दु हरिचन्द्र ने भी अन्धेरनगरी नामक प्रहसन इसी कथानक को लेकर लिखा था। सम्भवत: दोनों लेखकों ने किसी समान स्रोत से इसका कथानक लिया हो।

अब संस्कृत-वाक्यप्रबोध को लें। संस्कृत सम्भाषण का अभ्यास कराने के लिए लिखी गई पठन-पाठन व्यवस्था की इस पुस्तक में राजप्रजा सम्बन्ध तथा साक्षि-प्रकरण ऐसे हैं जो न्यायव्यवस्था को लेकर दयानन्द के गम्भीर सोच को दर्शाते हैं। किसी से ऋण लेने और समय पर न चुकाने, तत्पश्चात् न्यायलय में वाद प्रस्तुत करने तथा इस प्रकरण में साक्षियों को बुलाकर सत्यासत्य को जानने जैसे न्यायालय से जुड़ी समस्याओं को लेखक ने गम्भीरता से उठाया है। आश्चर्य है कि सांसरिक लौकिक समस्याओं से स्वयं को निर्लेप रखने वाले संन्यासी दयानन्द को मुकद्दमे मामलों में होने वाली अनियमितताओं तथा धांधलियों से कितनी पीड़ा होती थी।

राजसभा को लेकर इसी ग्रन्थ में एक अन्य प्रकरण है। इसमें राजसभा के संगठन, युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों तथा अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा में तत्पर तत्कालीन अफगान लोगों के अंग्रेजों से युद्धरत होने की तात्कालिक घटनाओं को बखूबी चित्रित किया गया है। दयानन्द की दृष्टि में मनुष्य का यह जन्मजात स्वभाव है कि वह प्रत्येक स्थिति में अपने स्वत्व की रक्षा में तत्पर रहता है। उनका कथन है कि जब पशु-पक्षी भी अपने घोंसले की येन-केन प्रकरेण रक्षा करते हैं तो मानव स्वदेश की रक्षा में तत्पर क्यों नहीं होगा। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में आये ऊपर विवेचित सभी प्रसंग उनकी राज्य-प्रशासन एवं राजधर्म विषयक जागरूकता के परिचायक हैं।

## 131वां वार्षिक उत्सव एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 131 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 18 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2017 तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा चैतन्यमुनि जी के प्रवचन एवं माता सत्याप्रिया याति एवं श्री राजेश अमर प्रेमी जी के मधुर भजन हुए। प्रतिदिन प्रात: स्वास्ति याग के मन्त्रों द्वारा यज्ञ किया गया तथा रात्रिकालीन बेला में 7:45 से 9:00 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ।

दिनांक 24 दिसम्बर 2017 को आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर एवं महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला जालन्धर के संयुक्त तत्वावधान में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस का आयोजन किया गया। प्रात: 8:30 बजे से 10:30 बजे तक स्वास्ति याग यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। श्री सोहन लाल सेठ जी ने सपरिवार यजमान बनकर अन्य सभी यजमानों सहित यज्ञ को सम्पन्न कराया तथा विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त किया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री एवं पं. विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। इस अवसर पर यज्ञशेष के साथ आर्य समाज अलावलपुर के पूर्व प्रधान स्व. महाशय गुरप्रसाद जी द्वारा लिखित लघु पुस्तिका ओंकार स्तोत्र भी वितरित किया गया। यज्ञ के पश्चात महर्षि दयानन्द मठ के मन्त्री श्री राजिन्द्र विज एवं श्रीमती प्रभा विज जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

ठीक 11:00 बजे दोनों संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री राजेश अमर प्रेमी एवं श्रीमती सीमा अनमोल में अपने भजनों के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री राजिन्द्र विज ने एक कविता के माध्यम से बलिदान दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी एवं श्री सुरेश शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने देश के लिए, वैदिक धर्म के लिए तथा महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को पूर्ण करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। ऐसे त्यागी तपस्वी के पद्चिह्नों पर चलना ही उन्हें सच्ची श्रद्धाजंलि है। आर्य समाज के संरक्षक श्री सोहन लाल जी सेठ ने आए हुए सभी विद्वानों का तथा श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया। मंच का संचालन प्रिं. श्री श्रवण भारद्वाज जी ने किया। लंगर की व्यवस्था का समुचित प्रबन्ध आर्य समाज के प्रधान श्री विनोद सेठ जी ने किया। कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ के साथ किया गया तथा सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द मठ के प्रधान सर्वश्री कुन्दन लाल अग्रवाल, सोहन लाल सेठ, श्रवण भारद्वाज, रमेश कालड़ा, विनोद सेठ, रवि मित्तल, इन्द्र कुमार शर्मा, नरेश मल्हन, राजेश आर्य, राम भुवन शुक्ला, श्रीमती सुदेश मित्तल, श्रीमती प्रभा विज, माता राजरत्ती, आर्य समाज अलावलपुर के प्रधान श्री सत्यशरण जी गुप्ता एवं मन्त्री श्री जय प्रकाश शास्त्री जी भी उपस्थित थे।

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन जालन्धर में दिनांक 23-12-17 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस अत्यन्त श्रद्धा व उत्साहके साथ मनाया गया। इस सुअवसर पर प्रातः यज्ञ हुआ, पं. सत्यप्रकाश शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार ने स्वामी जी के जीवन त्याग, बलिदान के ऊपर भजन "स्वामी श्रद्धानन्द प्यारा है, तन, मन, धन अपना निज देश पर वारा है" सुनाया।

मुख्य यजमान के रूप में श्री जगदीश शर्मा जी सपत्निक, दमयन्ती सेठी जी एवं परिवार यजमान बने साथ में प्रणव मागो, सुनाता मागो बने श्री सुशील शर्मा जी स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी तप, त्याग, श्रद्धा, सेवा दृढ़संकल्प एवं साहस के प्रतिमूर्ति थे। उनके हर एक कार्य प्रसंशनीय एवं अनुकरणीय है।

उनका जन्म जिला जालन्धर पंजाब के तलवन गांव में लाला मानक चन्द जी के घर में हुआ, बाल्य नाम मुन्शीराम एवं वृहस्पति रखा गया था। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के थे। आपका बाल्य, युवाकाल यू.पी. के भिन्न-भिन्न शहरों में बीता, क्योंकि आपके पिता पुलिस में थे। 1879 को वरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संम्पर्क में आये, भटके हुए एक मुंशीराम को जिस सत्य की खोज थी वह मिल गया।

सब बुराईयां दयानन्द स्वामी जी विचारों के प्रभाव से दूर हो गया। पश्चात् लाहोर में आर्य समाज के सदस्य बने और मुंशीराम से महात्मा मुन्शीराम बनने का रास्ता खुल गया।

आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए गुरूकुल प्रणेता के सुत्रधार बने गुरूकुल कांगड़ी, गुरूकुल कुरूक्षेत्र और कन्या गुरूकुल देहरादून उनकी ज्ञान-साधना के मुँह बोलते उदाहरण है।

हजारों विधर्मि मुसलमानों की शुद्धि कर पुनः वैदिक सनातन धर्मी बनाने वाले और लाखों दलितों को मुस्लिम बनने से बचाने वाले थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने जब कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति अपनाते देखा तो उन्होंने कहा कि यह नीति आगे चलकर राष्ट्र के लिए विघटनकारी सिद्ध होगी। इसके बाद कांग्रेस से उनका मोह भंग हो गया। देश के लिए 23 दिसम्बर को 1926 को नया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी धर्म चर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके गोली मार कर इस महान विभूति की हत्या कर दी। उसे बाद में फांसी की सजा हुई।

इस तरह धर्म, देश, संस्कृति शिक्षा और दलितों का उत्थान करने वाला यह महापुरुष सदा के लिए अमर हो गया।

इस सारे कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने करते हुए कहा हमें स्वामी जी के विचारों को एवं उनके कार्यों को और आगे बढ़ाये एवं प्रचार करें। जिससे समाज में सुधार एवं क्रान्ति आये अपने सोच में तथा कार्यों में ऐसे महान बलिदानी को कोटि-कोटि प्रणाम।

प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया। मौके पर श्री राजेश सेठी, श्रीमती पुनम सेठी, श्री मती हर्ष सेठी, श्रीमती स्तुति, वसुधा तरुण सेठी, विनोद सेठी, आनन्द प्रकाश चावला, रमेश चोपड़ा, जगजीत चन्द्र मल्होत्रा जोगिन्द्र भण्डारी, श्रीमती निर्मला दास, श्री मती उमा तनेजा, श्रीमती उषा मेहता, श्री सत्येन्द्र महाजन, मोहन चावला, श्रीमती सुशीला बत्रा, श्रीमती प्रोमिला अरोड़ा, श्रीमती सुशील खरवन्दा, श्री धर्मवीर भाटिया, श्री आजय महाजन जी उपस्थित थे।

**-अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज मन्दिर माडल टाऊन**

## आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

## केंद्र सरकार हर वर्ष वेद के 16 विद्वानों को करेगी सम्मानित: प्रो. स्वतंत्र कुमार

वेद विद्या के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने वेद के विद्वानों को सम्मानित करने की आदर्श योजना बनाई है, जिसके अंतर्गत केन्द्र सरकार हर वर्ष वेद के 16 विद्वानों को सम्मानित करेगी, जिनमें 11 विद्वानों को 5-5 लाख रुपए की राशि से पुरस्कृत किया जाएगा तथा शेष 5 वेद विद्या के युवा विद्वानों को 1-1 लाख रुपए भेंट करके सम्मानित किया जाएगा। इस योजना के लिए भारत सरकार विशेष तौर पर केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह बधाई के पात्र हैं। यह बात प्रो. स्वतंत्र कुमार उपप्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब ने कही।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में समस्त मानवता पथ भ्रष्ट होती जा रही है। आज का मानव, भय, आतंक, ईर्ष्या, द्वेष, अंधविश्वास का जीवन जी रहा है। मानवीय मूल्यों का तेजी से हनन हो रहा है। आपसी प्रेम, त्याग, बलिदान, राष्ट्रीयता, आपसी भाईचारा व नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। इन सबका कारण वेद विद्या से विमुख होना है।

वेद एक मानवीय विज्ञान है। समस्त मानवता से संबंधित समस्याओं का समाधान वेदों से मिलता है। एक आदर्श समाज की कल्पना की पूर्ति वैदिक शिक्षा से ही हो सकती है।

वेद विद्या भारत के ऋषि-मुनियों की तप, त्याग व तपस्या की देन है। वेद भारतीय सभ्यता व संस्कृति की धरोहर है। वेद विद्या के कारण ही अतीत में भारत विश्व गुरु कहलाया और आज भी सुख-शांति समृद्धि व नैतिकता की पुनः स्थापना के लिए वेद की शिक्षा ही मानव का मार्ग दर्शन कर सकती है। इसलिए भारत सरकार ने वेद के विद्वानों को उत्साहित करके समस्त मानवता के कल्याण की ओर एक कदम बढ़ाया है।

## हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

आर्य समाज मन्दिर कमलापुर होशियारपुर में दिनांक 24-12-2017 (रविवार) को हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। गोल्डकोस्ट (आस्ट्रेलिया) से भारत आये आर्य परिवार के डॉ. रवि रौली अपनी पत्नी डॉ. मोनिका वालिया और बच्चों कुमार आरव और कुमारी रिशवी के साथ मिल कर यज्ञ करवाया। पटियाला से भी श्री पवन नरुला अपनी पत्नी श्रीमती दिव्या नरुला और बेटा अंश नरुला के साथ आहुतियां डाली।

तत्पश्चात् 'दयानंद हाल' में कार्यक्रम चला। श्री प्रेम कुमार ऐरी और श्रीमती संगीता शर्मा ने मार्मिक भजन सुनाये। मंच से मन्त्री प्रो. यशपाल वालिया ने स्वामी श्रद्धानंद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन और कार्यक्षेत्र पर प्रकाश डाला। डा. प्रो. प्रेम नाथ चोपड़ा ने अपने मुख्य उदबोधन में 'कल्याण मार्ग के पथिक' स्वामी श्रद्धानंद को महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के बाद प्रथम पंक्ति का सबसे श्रेष्ठ अग्रणी बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने विशेषकर राजनीति और शिक्षा के क्षेत्र में महती योगदान दिया। व्यक्तिवाद की अपार प्रगति में स्वामी श्रद्धानंद निखर कर सामाजिक और बौद्धिक तौर पर स्वामी दयानंद सरस्वती के पदचिन्हों पर चलते हुए न केवल अपने जीवन को सफल बना गये अपितु अपने पीछे वाली पंक्ति के लिये प्रकाश स्तम्भ सिद्ध हुए। राजनीति की उथल पथल में कांग्रेस के लिये काम किया, विमुख भी हुए। दिल्ली में जामा मस्जिद के मंच से भाषण दिया तो जलियांवाला बाग की त्रासदी के बाद स्वागत अध्यक्ष भी बने।

गुरुकुल कांगडी का बीज जो उन्होंने अपनी अदभुत लगन और परिश्रम से बोया आज वट वृक्ष है हालांकि उनका स्वपन कुछ एक बाधाओं के होते हुए पूरा नहीं हो पाया। उनके द्वारा चलाया गया शुद्धि आंदोलन आज हो रहे धर्म परिवर्तन पर एक प्रश्न चिन्ह बन कर रह गया है। उनके जीवन से यह सच्ची सीख मिलती है कि आज के दिन संसार में जितनी भी समस्याएं सामने आ रही है उनका समाधान वेद विचार ही है। अंत में प्रिं. के. सी. शर्मा ने उपस्थित आर्य जनों का और मुख्य प्रवर्चन कर्ता का धन्यवाद किया। आचार्य भद्र सेन का साधुवाद भी प्राप्त हुआ।

**-डॉ. सविता ऐरी**

# आर्य समाज समराला में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

*आर्य समाज समराला एवं जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में आर्य समाज मंदिर समराला में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इससे पूर्व आर्य समाज में हवन यज्ञ किया गया। आर्य समाज श्रद्धानंद बलिदान दिवस पर पधारा जनसमूह एवं शोभायात्रा निकालते हुये आर्य जन।*

आर्य समाज समराला एवं ज़िला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन रविवार 24 दिसम्बर, 2017 को आर्य समाज मन्दिर समराला में श्रद्धा व उत्साह के साथ किया गया। लुधियाना से आर्य-जन एक बस द्वारा जिसमें पूर्ण रूप से सीटें भरने के बाद भी बहुत संख्या में आर्यों खड़े होकर भी खुशी-खुशी भजन-गान करते 10 बजे समराला पहुँचे। नगर के प्रवेश द्वार पर आर्य समाज समराला के अधिकारी व अन्य गण मान्य में सब का स्वागत किया व शोभा यात्रा के रूप में जय-घोष व भजन गाते हुए आर्य समाज मन्दिर में पहुँचे। सभी को बड़े-प्रेम से प्रातः राश करवाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज समराला के प्रधान श्री सोम प्रकाश जी ध्वजारोहण करने के उपरान्त पं. राजेन्द्र व्रत जी पुरोहित आर्य समाज के ब्रह्मात्व में पवित्र यज्ञ से हुआ। पांच यज्ञ-कुण्डों पर बैठे यजमानों ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। यज्ञ का प्रबन्ध श्री श्रवण बत्रा द्वारा बड़े सुचारू रूप से किया गया। समराला आर्य वीर दल के नन्हें बच्चों ने एक मनोहर गीत प्रस्तुत किया। आर्य सीनीयर सैंकडरी स्कूल लुधियाना की प्रबन्धक आदरणीय बहिन श्रीमती विनोद गांधी जी के कर कमलों द्वारा ज्योति प्रदीप्त की गई। सभी उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने फूल-मालाएं पहना कर उन का हार्दिक अभिनन्दन किया। ज़िला आर्य सभा के महामंत्री डॉ. विजय सरीन ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि महाऋषि दयानन्द जी के सम्पर्क में आने के पश्चात् मुंशी राम जी ने अपने जीवन की सारी बुराईयों को छोड़ समाज-सुधार व राष्ट्र सेवा के लिए अपना सारा जीवन आहुत कर दिया। पं. राजेन्द्र व्रत जी ने महर्षि दयानन्द पर आधारित भजन "तारीफ करूँ क्या उस की, जिसने हमें जगाया व साढ़े देश दी तू बिगाड़ी बनाई, ओ जोगिया टंकारे वाले का" सुनाने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी तेरे तो जमाना सदके" भजन सुना स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान गाथा प्रस्तुत की। कुमार दिवांश ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्र पाठ सुनाया व श्रीमती बाला गंभीर जी ने "मेरा लख लख है प्रणाम अमर शहीदां नूँ" एक गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती विनोद गांधी जी ने कहा कि हमें अपना अहंकार व क्रोध छोड़ आपस में प्रेम व स्नेह से मिलकर आर्य समाज का कार्य करना चाहिए। पंजाब विश्व विद्यालय चण्ड़ीगढ़ से पधारे डॉ. वीरेन्द्र अलंकार (अध्यक्ष संस्कृत विभाग एवं दयानन्द पीठ) जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया जिस से लाखों धर्म विमुख हिन्दुओं को पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश करवाया। वह हिन्दु मुसलमान एकता के पक्षधर थे अतः उन्होंने सब को इकट्ठा कर उन्हें देश की आज़ादी के लिए हर सम्भव कुरबानी देने के लिए तैयार किया। वह सम्पूर्ण आज़ादी चाहते थे जिस में दलित व महिला वर्ग को सम्मान का दर्जा प्राप्त हो। महर्षि दयानन्द जी ने लोगों को ईश्वर का सही स्वरूप बतलाया। अकाल-पुरुष ईश्वर की उपासना करनी ही उचित है ठहराया। वह एक भाषा एक देश एक ही वैदिक धर्म के सूत्रधार थे। गलत परम्पराओं को छोड़ ऋषि परम्पराओं पर चलने के लिए प्रेरित किया। इसी विचारधारा को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बढ़ाने के लिए, गुरुकुल की स्थापना की और जीवन पर्यन्त उसके जुड़े रहे व राष्ट्र व समाज हित अपना बलिदान दे दिया। आर्य समाज समराला ने सभी विद्वानों, विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। ज़िला आर्यसभा की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज के दिन हमें संकल्प लेना चाहिए कि जिस कार्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बलिदान दिया, उस वैदिक धर्म की मान्यताओं को अपने जीवन में अपनाते हुए तथा औरों को भी प्रेरित करते हुए राष्ट्र व धर्म की रक्षा करेंगे। आर्य समाज समराला के सभी पदाधिकारियों पुरोहित जी तथा सभी सदस्यों ने बड़ी परिश्रम व लगन से इस कार्यक्रम को सफल करने में पूर्ण प्रयास किया। विशेषकर प्रधान श्री सोम प्रकाश व मंत्री श्री अमरेश कुमार जी जिनकी देख-रेख में सारा कार्य पूर्ण हुआ। ईश्वर की अपार-कृपा से सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शांति पाठ के पश्चात् सभी ने मिल कर ऋषि लंगर ग्रहण किया। लुधियाना ज़िला की सभी आर्य समाजों का शिक्षण संस्थाओं का पूर्ण सहयोग रहा। सभी का धन्यवाद।

**-विजय सरीन महामंत्री**

# स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

ब्रिटिश हुकूमत द्वारा भारत पर अपना कब्जा सदा रखने के उद्देश्य से लागू की गई लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति आज भी जारी है। जबकि देश को स्वतन्त्र हुए 70 वर्ष बीत चुके हैं। जिसके कारण हमारी युवा पीढ़ी में प्रतिदिन नैतिक मूल्यों का अभाव होता जा रहा है। जो चिन्ता की बात है। यह विचार स्थानीय आर्य समाज औहरी चौक बटाला एवं आर्य मॉडल स्कूल बटाला में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को समर्पित वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में सभा के उप प्रधान प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने व्यक्त किए। प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने कहा कि इस शिक्षा के लागू होने से पूर्व भारत में कोई भिखारी नजर नहीं आता था और गुरूकुलीय शिक्षा नीति से राष्ट्र में न केवल अच्छे विद्यार्थी होते थे बल्कि उनमें नैतिक आदर्श भी कूट-कूट कर भरे होते थे। मगर आज अंग्रेजों की शिक्षा नीति के कारण हमारे नैतिक मूल्य भी नष्ट होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि हमारी प्रादेशिक व केन्द्रीय सरकार इस शिक्षा पद्धति की बजाय प्राचीन काल से चली आ रही गुरूकुलीय शिक्षा नीति लागू करे ताकि भारत पुनः विश्व गुरू बन सके। इससे पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधायक श्री जगदीश साहनी ने कहा कि हर्ष का विषय है कि आर्य समाज बटाला हमारी नई पीढ़ी को अपने प्राचीन विरसे से जोड़ने का हर समय प्रयास कर रहा है जो कि प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि हमें अपने बच्चों को न केवल सचेत करना होगा बल्कि उन्हें अपनी पुरानी वैदिक संस्कृति से जोड़कर उनमें पनप रही सामाजिक कुरीतियों से भी बचाना होगा। इस अवसर पर स्कूल की छात्र-छात्राओं ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि स्वरूप भाषण व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इससे पूर्व स्कूल की प्रबन्धक कमेटी के चेयरमैन प्रविन्द्र चौधरी ने आए बलविन्द्र मैहता, डॉ नरिन्द्र खुल्लर, गौशाला ट्रस्ट के प्रधान अशोक अग्रवाल, भूषण बजाज, शक्ति शर्मा, प्रिंसिपल हरिकृष्ण, प्रिं. के.सी. महाजन, प्रि. नीरू शैली, प्रो. अश्वनी कांसरा, प्रो. सोहन लाल, इन्द्र सानन, बलदेव राज बेदी, स्त्री समाज की प्रधाना शशि अग्रवाल भी उपस्थित थी।

*आर्य समाज औहरी चौक बटाला एवं आर्य माडल स्कूल बटाला में गत दिनों स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री स्वतंत्र कुमार जी, आर्य समाज के प्रधान परविन्द्र चौधरी जी एवं अन्य उपस्थित थे।*

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।